

ISSN - 2231 - 2749

NUMBER - 32

2019

**A PEER REVIEWED
JOURNAL
OF THE
MADHYA PRADESH ITIHAS PARISHAD**



EDITORS

Prof. R. N. Shrivastava

Prof. Vandana Gupta

समसामयिक संदर्भों में गाँधीजी का अहिंसक श्रम-दर्शन

डॉ. पंकज सिंह

सहायक प्राध्यापक - इतिहास

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

मानव-सभ्यता के विकास के लिहाज से देखा जाय तो आज मानव-जाति एक साथ समस्त सांभ्यतिक उपलब्धियों और सांभ्यतिक दुविधाओं के बीच जीने को मजबूर है। इस आधुनिक संकट ने आज समाजों के इंकलाबी रूपांतर की संभावनाओं को तो रोका ही है, साथ ही इसकी वजह से वैज्ञानिक अग्रविकास के नाम पर पर्यावरण-संकट और प्राकृतिक संसाधनों के व्यापक दोहन की होड़ मच गयी है। भौतिक समृद्धि और हथियारों के बल पर सर्वश्रेष्ठ बनने की कुत्सित महत्वाकांक्षा के चलते आज विश्व विनाश के कगार पर पहुँच गया है। आज राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय दोनों स्तरों पर चलने वाले हिंसक वैचारिक टकराव, विकट जातीय द्वेष, आक्रामक एवं संकीर्ण राष्ट्रवाद, सांप्रदायिकता और मूलवाद के प्रति अतिशय आग्रह ने दुनिया को तीसरे विश्व-युद्ध के दहलीज पर खड़ा कर दिया है। आज दुनिया के अधिकांश देश परमाणु अस्त्रों की संख्या में अंधाधुंध वृद्धि कर वैश्विक स्तर पर अपने प्रभाव को बढ़ाने में लगे हैं। जो निश्चित ही एक दिन दुनिया के लिए अकल्पनीय विनाश का कारण बनेगा। ऐसे में सुखद वर्तमान और समृद्ध भविष्य की संभावना को जीवित रखने और उसे संभव बनाने के लिए गाँधीजी की जरूरत सबसे ज्यादा है। गाँधीजी का सम्पूर्ण चिंतन प्राणिमात्र के मुक्ततम और सर्वोत्तम अभ्युदय का विश्वसनीय आश्वासन है। उनकी चिंताओं में मनुष्य के साथ ही मनुष्येत्तर दुनिया भी शामिल है। मानवजाति का मौजूदा संकट सभ्यतामूलक विकास की समस्याओं पर केंद्रित हो रहा है, ऐसे में गाँधीजी की ओर हमारी वापसी उचित भी है और जरूरी भी।

महात्मा गाँधी ने भारतीय संस्कृति, विचार और राजनीति को इतनी गहराई से प्रभावित किया है कि उनके समस्त अवदान का सम्यक् मूल्य निर्धारित करना अभी किसी के लिए सम्भव नहीं दिखता। भारत ही नहीं आज विश्व का प्रत्येक सजग एवं चेतनावान व्यक्ति गाँधीजी की ओर उम्मीद भरी निगाह से देख रहा है, क्योंकि वे गाँधीजी ही थे जिन्होंने पशु-बल के बरक्स आत्म-बल को एवं तोपों और मशीनगनों के बरक्स अहिंसा को प्रस्तावित किया।

गाँधीजी ने धर्म को संस्कृति की बजाय सभ्यता के अर्थों में ग्रहण किया। इसका नतीजा यह निकला कि वे भारत के सामाजिक विकास के इतिहास को भारत की सभ्यता के उन पक्षों से जोड़कर देखते रहे, जो पश्चिमी सभ्यता की बुराइयों के विकल्प की तरह हमारे पास मौजूद थे। भारत की सभ्यता के ये पक्ष थे-आदमी का कुदरत के साथ सहज रिश्ता, आत्मसंयम के साथ वाजिब शारीरिक श्रम करते हुए जीवन बिताने का विवेक, आत्मनिर्भर आर्थिकता के लिए जरूरी उत्पादन-संबंधों की पारस्परिकता और स्व पर राज्य करने की चेतना से जन्म लेने वाला मनुष्य केंद्रित सत्तातंत्र। भारतीय सभ्यता के इन तमाम जैव-सामाजिक पक्षों का आधार गाँधीजी को भारत के गाँवों में दिखाई देता है। भारत के गाँवों का मूल स्वभाव है वहाँ के सामाजिक वर्गों या